श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १

जून २०२४

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. वीर प्रभु की प्रथम देशना निष्फल होते ही प्रभु विहार करके. .... उद्यान में पधारे ।
२. आत्मरुपी भूमि................ के द्वारा ही निर्मल हो सकती हैं ।
३. ... . स्तोत्र के द्वारा पंच परमेष्ठि से उत्पन्न हुई रक्षा जो करता है उसे भय, आधि व्याधि नहीं आती ।
४. अलोक में .... का अभाव है ।
५. जो प्रमादवश सिर्फ देह का पोषण करते हैं और संयम्मीकरण में निर्बल जैसे हैं वे................ कहलाते हैं ।
६. कार्मण वर्गणा अत्यंत सूक्ष्म................ सर्वत्र है ।
७. विरति यह..................... है तो सम्यग् दर्शन यह धागा है ।
८. मैं प्रतिदिन सोते वक्त सात एवं उठते समय.................. गिनूंगा ।
९. गीतार्थ की बात न समझे न स्वीकारे वह श्रावक.................. के समान जानना ।
१०. इन्द्रभूति गौतम का जन्म.................. नक्षत्र में हुआ था ।
११. हम सब................ लोक में रहते हैं ।
१२. आनंद कामदेव वगैरह.................. श्रावक थे ।
१३. शरीर, इन्द्रिय, रुप रंग वगैरह देने वाला तथा आत्मा के अरुपी गुण को आवृत करने वाला.............. कर्म है ।
१४. दोनों चरण में सुंदर पादुका रुप ऐसे लोक में रहे हुए................ को नमस्कार हो ।
१५. जंबूद्वीप के समुद्रों में उतरने के बडे उतार स्थान.................. कहलाते हैं ।
१६. .... की हर क्रिया उसकी छोटी भी आरधना कर्म निर्जरा एंव पुण्य के लिये होती है ।
१७. चक्रवर्ती को जीतने योग्य क्षेत्र............... कहलाता है ।
१८. सभी पापों का नाश करने वाला नवकार मंत्र बाहर से चारों दिशाओं में .... जैसा है ।
१९. कार्मण वर्गणा का आत्मा की तरफ खिंचना और आत्मा से जुडना यह.................. है ।
२०. इन्द्रभूति गौतम को.............. की पदवी अनेक बार प्राप्त हो चुकी थी ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. कौन से ब्राह्मण ने यज्ञ करने हेतु उस समय के महान समर्थ ब्राह्मण पंडितों को वहां एकत्रित किया था ?
२. कुमारपाल महाराजा का फोटो यह किस प्रकार का श्रावक है ?
३. प्रथम कर्म ग्रंथ का नाम क्या है ?
४. मोक्ष मार्ग कौन से राजमहल से होकर गुजरता है ?
५. जिन शासन में किसका खजाना है ?
६. ज्योतिष चक्र का समावेश किस लोक में होता है ?
७. कर्म का आत्मा के साथ रहने का काल या समय क्या कहलाता है ?
८. वीर प्रभु का प्रथम समवसरण किस गाँव के नगर के बहार हुआ ?
९. श्रावक शब्द का "व" किसे सूचित करता है ?
१०. इन्द्रभूति की जन्मभूमि कौनसी है ?
११. अभिमान वश साधु के छिद्र देखकर समाज में निंदा करे वो श्रावक कैसे कहलाते हैं ?
१२. कर्म बंध का चौथा कारण कौन सा है ?
१३. सभी धर्मो को समान माना हो तो कौनसा अतिचार लगता है ?
१४. विद्याधरों के नगर कहाँ आये हुए हैं ?
१५. सम्यकत्व के द्वारा क्या किये बिना एकभी धर्मकृत्य शोभा नहीं देता ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. श्रवंति २) पिधानं ३) समणोवासगा ४) विग्धं ५) वज्रो ६) सोहओ ७) सव्वन्नुं ८) वय ९) मोचके १०) विवागं ११) सेढीओ
१२. पइणा समाणे १३. आयुधं १४) पओसा १५) भायसमाणे १६) क्षेयं १७) चरे १८) सुत्ता १९) कूडा २०) इयं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कर्मबंध हेतु	१) गोत्रकर्म	६) सांख्य दर्शन	६) वादिचक्र चुडामणि
२) सम्यग् दर्शन	२) मृदंगाकार	७) वज्रपंजर स्तोत्र	७) मिथ्यात्व
३) श्राद्धविधि	३) रसबंध	८) तीव्रतमता	८) कांक्षा अतिचार
४) इन्द्रभूति	४) आत्मरक्षा	९) उर्ध्वलोक	९) रत्नशेखर सूरि
५) स्थानांगसूत्र	५) प्रकृति	१०) अगुरु लघु	१०) चार प्रकार के श्रावक

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. आठ कर्म की कुल प्रकृति कितनी ?
२. श्री इन्द्रभूति को वीर प्रभु कितनावे वर्ष में मिले ?
३. मध्यलोक कितने योजन प्रमाण है ?
४. श्री अरिहंत प्रभु कितने दोष से रहित है ?
५. जीव ग्राह्य वर्गणाएं कितनी है ?
६. मनुष्यों के जन्म मरण कितने क्षेत्र में होते है ?
७. इन्द्रभूति कितने शिष्यों के साथ वीर प्रभु के पास गये ?
८. जंबुद्वीप में भौगोलिक दृष्टि से मुख्य पदार्थ कितने ?
९. अरिहंत प्रभु जहाँ विचरते हैं वहाँ कितने योजन तक मारि मरकी रोग आदि का उपद्रव नहीं होता ?
१०. मनुष्य क्षेत्र कितने योजन लंबा-चौडा विस्तार वाला है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. संपूर्ण लोक के १४ विभाग करने में आये हैं ।
२. पंच परमेष्ठि से उत्पन्न हुई रक्षा जो करता है, उसे मंत्र, तंत्र, उपद्रव बाधित नहीं करते ।
३. श्रावक कहलाती व्यक्ति में श्रावक योग्य गुण न हो तो वह नाम श्रावक है ।
४. श्री इन्द्रभूति को आत्मा है या नहीं ऐसी शंका थी ।
५. श्री वीतराग परमात्मा से अलग अपना स्वयं का मत प्रस्थापित करे वो संसक्त कहलाता है ।
६. उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य इन त्रिगुणात्मक छः द्रव्यों का जहाँ अवस्थान है वह अलोक है ।
७. कृष्ण महाराजा दर्शन श्रावक हैं ।
८. पंचास्तिकाय में समयास्तिकाय का समावेश होता है ।
९. साधुओं की सेवा भक्ति करे, साधु का प्रमादाचरण देखकर स्नेह रहित न हो और साधुओं पर सदा हितवत्सल हो वे भाई समान श्रावक जानना ।
१०. पवित्र आचार और उम्दा विचारों के बिना मनुष्य सच्ची सुख शांति अनुभव नहीं कर सकता ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. यज्ञ का महिमा कितना ज्यादा महान है, इसमें साक्षात देव आ रहे हैं ।
२. सम्यग् दर्शन यानि सुदेव-सुगुरु-सुधर्म में अटूट सच्ची श्रद्धा ।
३. मस्तक पर रहे हुए सिर के कवचरुप अरिहंत भगवान को ओंकारपूर्वक नमस्कार हो ।
४. यहाँ पर पुण्यशाली दिव्य वैभवों की अनुभुति करने वाले देव निवास करते हैं ।
५. मैं वर्ष में एक बार अवश्य सिद्धाचल की यात्रा करुंगा ।
६. द्रह याने छोटे सरोवर, कुंड, मुख्य कुंडो की गिनती की गई है ।
७. योग याने मन वचन काया की प्रवृति ।
८. अरे इस दुष्ट पापी ने यह क्या किया ? इसने सर्वज्ञ के रुप में स्वयं को जाहिर कर मुझे क्रोधित किया है ।
९. नवतत्वादि पर श्रद्धा रखे, सिद्धांतादि का श्रवण करे, आत्म स्वरुप का चिंतन करे, सुपात्र में धन वापरे, साधु सेवा द्वारा पुण्य प्राप्त करे वह उत्तम श्रावक कहलाता है ।
१०. ऐसी रक्षा करके की गई साधना निर्विघ्न बनती है और शीघ्र सफलता देती है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मोदक के दृष्टांत से चार प्रकार के कर्म बंध समझाओ । २) श्रावक कैसा हो यह बताकर अपना नंम्बर कहाँ यह बताओ ।
२. सम्यग् दर्शन याने क्या वह बताकर उसका महिमा लिखो । ४) तिर्च्छालोक का स्वरुप संक्षिप्त में समझाओ ।
५. श्रीव्रजपंजरस्तोत्र द्वारा होती रक्षा समझाओ ।